Roll No. : .....

Total No. of Questions : **12**] [Total No. of Printed Pages : **4**

SA–121

B.A. (Part–III) DUE Part–I Suppl. Examination, 2021

HINDI LITERATURE

Paper - II

(कथा साहित्य)

Time : 1½ Hours] [*Maximum Marks : **100***

खण्ड–अ **(अंक : 2 × 10 = 20)**

नोट :– सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **50** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **2** अंक का है।

खण्ड–ब **(अंक : 8 × 5 = 40)**

नोट :– सात में से किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **200** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **8** अंक का है।

खण्ड–स **(अंक : 20 × 2 = 40)**

नोट :– चार में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **500** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **20** अंक का है।

खण्ड–अ

1. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। (उत्तर-सीमा **50** शब्द) :

   (i) 'एक ज़मीन अपनी' उपन्यास में अंकिता कौन है ?

   (ii) सुधांशु कौन है ? संक्षिप्त परिचय दीजिए।

   (iii) 'मधुआ' कहानी में शराबी का मन क्यों बदल गया ?

(iv) 'चीफ की दावत' शीर्षक की सार्थकता पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

(v) 'स्नेह-बंध' कहानी का मूल उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

(vi) पाठ्यक्रम में संकलित राजी सेठ की कहानी का नाम बताते हुए कहानी का सारांश लिखिए।

(vii) 'स्मृतियों में पिता' कहानी की मूलभावना स्पष्ट कीजिए।

(viii) डॉ. सत्यनारायण के कृतित्व एवं व्यक्तित्व पर प्रकाश डालिए।

(ix) उपन्यास का अर्थ बताते हुए उसके स्वरूप पर प्रकाश डालिए।

(x) कहानी के प्रमुख तत्त्व कौन-कौनसे हैं ?

खण्ड–ब

निम्नलिखित सात अवतरणों में से किन्हीं **पाँच** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। (उत्तर-सीमा **200** शब्द)

2. "सुन रही हो न अंकू। ..... बहस हो सकती है ..... लेकिन, जिन्दगी और स्थितियाँ अमूमन इसका अवसर नहीं देतीं। तुम सोचती हो, लड़ाई सिर्फ हवा में हाथ-पैर मारते हुए लड़ी जा सकती है ? नहीं अंकू, नहीं, अपने को कुछ लचीला बनाओ। व्यवस्था का भागी हुए बिना उससे नहीं लड़ा जा सकता। उसमें पहुँचकर ही, उसका हिस्सा बनकर उसके तिलिस्म को भेदना होगा। ऐसी लड़ाई के कोई मायने नहीं हैं ..... तुम कगार पर खड़ी हुई पानी में उतरने से इसलिए नहीं कतरा रहीं कि पानी की गहराई से भयाक्रांत हो, तुम मगरमच्छों से आशंकित हो ..... मगर कूदो पानी में, मगरमच्छों से बच सको तो अपने को बचाते हुए मंझाओ उसे ..... आखिर मछलियों और पानी के अन्य जीव-जन्तुओं ने उनके साथ रहने का साहस किस तरह जुटाया होगा ..... ?"

3. बॉबी ठाकुर और गौरा प्रभाकर वाले प्रकरण के सन्दर्भ में उसे तिलक का कटाक्ष स्मृत हो आया, "न मानिए ..... पर आपके मानने न मानने से सच्चाई बदल जाएगी स्त्री-समाज की ? स्त्री-स्वातंत्र्य की आड़ में स्त्री व्यर्थ ही पुरुष वर्ग को शोषक बनाकर 'मारा', 'मारा' का हल्ला मचा रही है ..... स्त्री की वास्तविक लड़ाई स्त्री से है ..... उसकी असली शत्रु! कहीं वह सास बनकर शोषण कर रही है तो कहीं माँ बन चौकीदारी तो कहीं ननद बनकर जासूसी, तो कहीं प्रेमिका बनकर सीनाजोरी। इसके बीच में सारे घपले घट रहे हैं ..... आन्दोलन करना है तो स्त्री को, स्त्री की संकीर्णताओं और क्षुद्रताओं के विरुद्ध करना चाहिए। उसकी सामाजिक स्थिति में तभी परिवर्तन आ सकता है ..... बेचारा पुरुष बेभाव मारा जा रहा है .....।"

4. "चार दिन तक पलक नहीं झँपी। बिना फेरे घोड़ा बिगड़ता है और बिना लड़े सिपाही। मुझे तो संगीन चढ़ाकर मार्च का हुक्म मिल जाए। फिर सात जर्मनों को अकेला मारकर न लोटूँ तो मुझे दरबार साहब की देहली पर मत्थ टेकना नसीब न हो। पाजी कहीं के, कलों के घोड़े-संगीन देखते ही मुँह फाड़ देते हैं और पैर पकड़ने लगते हैं। थो अंधेरे तीस-तीस मन का गोला फेंकते हैं। उस दिन धावा किया था- चार मील तक एक जर्मन नहीं छोड़ा था। पीछे जनरल ने हट जाने का कमान दिया, नहीं तो .....।"

5. हृदय मसोस रहा था कि और पूड़िया कैसे पाऊँ। संतोष-सेतु जब टूट जाता है तब इच्छा का बहाव अपरिमित हो जाता है। मतवालों को मद का स्मरण करना उन्हें मदांध बनाता है। काकी का अधीर मन इच्छा के प्रबल प्रवाह में बह गया। उचित अनुचित का विचार जाता रहा। वे कुछ देर तक उस इच्छा को रोकती रहीं। सहसा लाडली से बोली-मेरा हाथ पकड़कर वहाँ ले चलो जहाँ मेहमानों ने बैठकर भोजन किया है।

6. शहर तो वीरान हो गया था। जहाँ-तहाँ लाशें सड़ने लगी थीं। घर लूट चुके थे और अब जल रहे थे। शहर के नामी डॉक्टर के पास कुछ प्रतिष्ठित लोग गए थे यह प्रार्थना लेकर कि वह मुहल्लों में जाएँ। उनकी सब लोग इज्जत करते हैं, इसलिए उसके समझाने का असर होगा और मरीज भी वह देख सकेंगे। वह दो मुसलमान नेताओं के साथ निकले। दो तीन मुहल्ले घूमकर मुसलमानों की बस्ती में एक मरीज को देखने के लिए स्टेथस्कोप निकालकर मरीज पर झुके थे कि मरीज के एक रिश्तेदार ने पीठ में छुरा भौंक दिया .....

7. "बड़ा बुरा मानेंगे। सारे शहर के लोग जावेंगे, और मैं समधिन होकर नहीं जाऊँगी तो यही समझेंगे कि देवरजी मरे तो सम्बन्ध भी तोड़ लिया। नहीं, नहीं, तू यह अँगूठी बेच ही दे।" और उन्होंने आँचल की गाँठ खोलकर एक पुराने जमाने की अँगूठी राधा के हाथ पर रख दी। फिर बड़ी मिन्नत के स्वर में बोलीं, "तू तो बाजार जाती है राधा, इसे बेच देना और जो कुछ ठीक समझे खरीद लेना। बस, शोभा रह जावे इतना ख्याल रखना।"

8. "अर्थी तैयार हो चुकी है। औरतों को आखिरी बुलावा आता है कि अंतिम दर्शन कर लो। सारी महिलाएँ नीचे उतरती हैं, मुझे भी साथ लेती हुई .....। जो छोटी है, उनके पैर छूकर प्रणाम कर रही हैं। जो बड़ी हैं, उन्हें हाथ जोड़कर विदा दे रही हैं। मुझे ले जाकर उनके पैरों के पास खड़ा कर दिया जाता है। मैं आँखें उठाकर उधर देखती हूँ ..... जाओ, हमारे बीच सिर्फ एक ही शब्द बचा है ..... क्षमा। जिसे दिया और लिया जा सकता है ..... मैंने न लिया ..... न दिया।"

खण्ड–स

किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर **500** शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

9. 'एक ज़मीन अपनी' उपन्यास कल्पना पर आधारित न होकर आधुनिक नारी की समस्याओं का लेखा–जोखा है। कैसे ? समझाइए।

10. 'बूढ़ी काकी' कहानी की मूल संवेदना को स्पष्ट करते हुए शीर्षक की सार्थकता पर विचार प्रकट कीजिए।

11. सुदेश बत्रा द्वारा रचित 'पानी के सात रंग' कहानी का उद्देश्य स्पष्ट करते हुए मूलभाव पर प्रकाश डालिए।

12. कहानी के तत्त्वों के आधार पर 'घिसटता कम्बल' कहानी की समीक्षा कीजिए।